

नीतिशास्त्र

मानव के आचरण / क्रियाकलाप / व्यवहार / ऐच्छिक कर्म से है (ऐसा कर्म जिसे हम सोच-समझकर किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए करते हैं)। इसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। ऐसे कर्मों को साधारण कर्म भी कहते हैं।

उचित या अनुचित के रूप में निर्धारण।

क्यों? → सुखद मानवीय जीवन की स्थापना

↓
देतु।

व्यक्तिगत हित एवं सामाजिक हित में समन्वय स्थापित करने देतु।

• नीतिशास्त्र वह नियामकीय या आदर्श मूलक विज्ञान है जिसमें-

(i) मानव के आचरण संबंधी नियमों, मानकों, मानदण्डों, मूल्यों आदि का निरूपण होता

हैं इनके आधार पर मानव के ऐच्छिक
कर्तों / आचरण का मूल्यांकन किया जाता
है (उचित / अनुचित के रूप में निर्धारण)।

(ii) व्यक्तिगत हित व सामाजिक हित में
सामंजस्य स्थापित किया जा सके, शांति
व व्यवस्था की स्थापना की जा सके,
के साथ-साथ सुखद मानवीय जीवन
की संभावना को साकारित किया जा सके।

नियामकीय विज्ञान (Normative Science) →

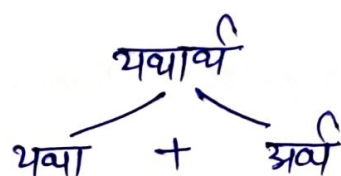
नीतिशास्त्र नियामकीय विज्ञान है।

किसी क्षेत्र विशेष का सुव्यवस्थित एवं
क्रमबद्ध अध्ययन विज्ञान है।

विज्ञान के 2 आयाम हैं -

(i) आवात्मक या वर्णात्मक या तत्वात्मक या

अध्यात्मिक -



ज्यों का ज्यों वर्णन,
इसका संबंध (है) से है } यथा

घटनाओं की कारण-परिणाम व्याख्या → मर्षी

(ii) नियामकीय या आदर्श मूलक विज्ञान →

- इसका संबंध चाहिए से होता है,
- यहाँ मूल्यांकन किया जाता है,
- मूल्यांकन के आधारेण या मानदण्डों की विवेचना,
- प्रयोजन परख व्याख्या ।

नीतिशास्त्र एक नियामकीय विज्ञान है क्योंकि इसमें क्षेत्र विशेष का सुव्यवस्थित अध्ययन होता है इसमें मानव के ऐच्छिक कर्तों और जीवन की नैतिक समस्याओं एवं मुद्दों का व्यवस्थित एवं पर्यवेक्षण दृष्टि से अध्ययन किया जाता है परंतु नीतिशास्त्र वर्णनात्मक विज्ञान न

होकर नियामकीय विज्ञान है। इसका संबंध (है) से न होकर 'चाहिए' से होता है, इसमें मानव के क्रिया-कलापों का ज्यों का त्यों वर्णन न करके कुछ नियमों, नैतिक मानदण्डों, मूल्यों के आधार पर यह बताया जाता है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?



सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाला सामान्य
मानव →

ऐच्छिक कर्म



जैसा चरित्र वैसा आचरण,

आचरण चरित्र का वाह्य पक्ष है,

आचरण को देखकर हम व्यक्ति के चरित्र
का अनुमान करते हैं।